मंथन के मोती

षष्ठम प्रतियोगिता - "कामकाजी महिला की दोहरी भूमिका"

" **सुलेखा समिति** की समस्त प्रतियोगिताएं चिंतन - मनन - लेखन के दिव्याकाश में दैदीप्य मान नक्षत्र की तरह उभर रही हैं | अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय सुलेखा समिति की षष्ठम प्रतियोगिता अपने नियत समय पर सफलता पूर्वक पूर्ण हो गयी | समय की प्रतिबध्दता सुलेखा समिति की विशेष पहचान है | पच्चीस प्रदेशों से 72 प्रविष्टियां आयीं | विचारों और भावों के सागर में डूब कर हमारी बहनें चुनिंदा मोती निकाल कर अपनी लेखनी को ही समृद्ध व सार्थक नहीं कर रहीं, अपितु अपने मन की बात बड़े ही सहज और सरल अंदाज़ में व्यक्त कर रही हैं, और अपने सशक्त विचारों और शब्दों के अति उत्तम चयन के द्वारा सबको यह सोचने पर बाध्य भी कर रही हैं कि क्या लेखिका वाकई सामान्य गृहिणियाँ हैं |

" **काम काजी महिला की दोहरी भूमिका** " लेख में एक बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई कि लड़कियों के काम काजी होने में व विवाहित महिलाओं के काम काजी होने में सर्वथा भिन्नता है | कई लेखों में पुरजोर भाव से इस विषय को दर्शाया गया | कुछ बहनों ने इस लेख को आत्मकथात्मक रूप से भी लिखा और अपनी समस्त अनुभूतियों को अपनी लेखनी के माध्यम से सबके समक्ष रखने का अनूठा प्रयोग किया | एक दिलचस्प बात यह रही कि अधिकाँश लेखों में विषय और विचारों का भटकाव नहीं था, भाषा सशक्त, सरल और स्पष्ट थी|

एक ओर जहां पारिवारिक जिम्मेवारियों के साथ साथ काम करती महिलाओं में दोहरी भूमिका निभाते हुए आत्म निर्भरता, आत्म विश्वास, स्व-विवेक से निर्णय लेने की कटिबध्दता, कार्य और समय का कुशलता पूर्वक प्रबंधन करने की क्षमता दिखी तो साथ ही साथ चुनौतियों का अदभुत धैर्य और संयम के साथ सामना करने की जीवटता, परिवार का सम्बल बनने की सुखानुभूति जैसे उज्जवल पक्ष भी सबके समक्ष आए |

दूसरी ओर बहनों की लेखनी में स्वयं को, बच्चों को, पति और परिवार को एवं सामजिक गतिविधियों को पर्याप्त समय न दे सकने की कसक व टीस भी नज़र आयी | सम्पूर्ण प्रयास के बाद भी घर और बाहर सबको खुश न रखने पाने का दुःख भी दिखा, तो दोहरी अपेक्षाओं के चलते चाहे अनचाहे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव होते हुए देखा गया | कुछ लेखों में नारी सशक्तिकरण की गूंझ भी थी |

हर बार की तरह कई लेख नियमों का पालन न कर पाने के कारण चयनित होने से वंचित रहे | विषय और विचारों का भटकाव, शब्द सीमा का उल्लंघन, प्रिंट सही न होने के कारण न पढ़ा जा सकना ये कुछ प्रमुख कारण थे जिनके कारण कई लेख प्रतियोगिता से बाहर हुए | कुछ लेखों में तो प्रस्तावना और उपसंहार सब कुछ गड-मड था | पर इन सबके बीच भी सुदृढ़ और सुन्दर विचारों की शीतल बयार समाज को अह्लादित करेगी, ऐसा हमें विश्वास है |

प्रतियोगिता अपने मूल भाव को कायम रख समाज को सोचने के लिए एक नयी विचार धारा देने में सक्षम हुई है | नारी उत्थान के लिए मैं यही कहना चाहूंगी कि -

दक्षता का स्थान दम्भ न लेले
वरना सम्बन्ध बिखर जाएंगे |
श्रेष्ठता का स्थान स्वार्थ न लेले
वरना परिवार बिखर जाएंगे |
नारी तू नारायणी है चतुर्भुज रूप धारिणी है |
अपनी स्व-चेतना से स्वयं ही नहीं समाज को भी जागृत करना है ||
आस और विश्वास का दिया जला हर बुलंदी को छूना है ||

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व की विशेष आभारी है जिनके अटूट विश्वास के कारण हमें इन प्रतियोगिताओं को सफलता पूर्वक संपन्न कराने का सुयोग मिलता है | निर्णायक मंडल का भी हम आभार प्रकट करते हैं | सभी प्रदेशों के पदाधिकारियों का सहयोग भी हमारा सम्बल बनता है | स्थानीय, जिला, प्रादेशिक स्तर से होते हुए राष्ट्रीय स्तर तक प्रतियोगिता को अपार सफलता प्रदान करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहभागी बनी सभी बहनों का भी समिति ह्रदय से धन्यवाद करती है और उम्मीद करती है कि आगे भी आपका यह सहयोग यथावत रहेगा |

धन्यवाद
राष्ट्रीय सुलेखा समिति संयोजिका
अर्चना लाहोटी, राघवगढ़